E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

बाल सतसई का समाजिक एवं मनोवैज्ञानिक प्रभाव

दिनेश चंद्र भूरिया,
सहायक प्राध्यापक हिंदी,
वीर सावरकर शासकीय महाविद्यालय पचोर,
जिला राजगढ़ (मध्य प्रदेश) पिन कोड
–465683

Paper Received date
05/02/2026
Paper Publishing Date
10/02/2026
DOI
https://doi.org/10.5281/zenodo.18713076

शोध सार

सतसई मुक्तक काव्य की एक विशिष्ट विधा है। साहित्यकारों ने सतसई को बहुत महत्व दिया है तथा इस ने बहुत अधिक प्रसिद्ध पायी है। सतसई शब्द 'सत' और 'सई' दो शब्दों से मिलकर बना है। सत का शाब्दिक अर्थ होता है सात और सई का अर्थ होता है सौ। कहने का तात्पर्य है कि एक ऐसा काव्य संग्रह जिसमें सात सौ छन्द या दोहे संग्रहित हो वह सतसई कहलाता है। सतसई को संस्कृत भाषा में सप्तशती और हिंदी में सतसई नाम से जाना जाता है।

हिंदी सतसई साहित्य का विकास संस्कृत साहित्य में प्राप्त सप्तशती साहित्य से जुड़ा हुआ है। सप्तशती को ब्रजभाषा में भी सतसई नाम से जाना जाता है। संस्कृत साहित्य में मुक्तक काव्य परम्परा का वैदिक काल से उद्भव माना जाता है।

प्राकृत भाषा में लिखी गयी 'गाथा सप्तशती' से सतसई परंपरा का उद्भव होता है। 'गाथा सप्तशती' के रचयिता 'हालकवि' को माना जाता है। प्राकृत साहित्य में इसके पहले कहीं भी सतसई साहित्य का कोई उल्लेख नहीं मिलता है। डॉ. अरुणा अब्रोल ने 'गाथा सप्तशती' के विषय में लिखा है–' महाराज शातवाहन के समय में ही मुक्तक काव्य के क्षेत्र में इस नवीन रचना विधान का उपक्रम हुआ। इसलिए कवि हाल ने सात सौ रसाप्लावित गाथाओं का संग्रह करके सम्पूर्ण 'गाथा सप्तशती' नाम रखा। इन गाथाओं के संपूर्ण रचनाकारों की संख्या के संबंध में निश्चित रूप में कुछ भी नहीं कहा जा सकता है।' 'गाथा' सप्तशती' की रचना के पीछे का कारण उस समय की परिस्थितियों का महत्वपूर्ण हाथ रहा है। इसमें नायक नायिका के संबंधों की चर्चा मुख्य रूप से होती है।

मुख्यबिन्दुः संग्रहित, भाषा, साहित्य, सप्तशती, संबंध

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

बाल सतसई पर शास्त्रीय दृष्टि से विचार किया जाए तो हाल की गाथा सप्तशती ऐसी रचना है जिसमें रस, अलंकार, रीति, ध्वनि और वक्रोक्ति जैसे विभिन्न काव्य–तत्वों के उदाहरण प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होते हैं और लक्षणा – व्यंजना का सौन्दर्य प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। लक्षणा – व्यंजना का सौन्दर्य अप्रतिम है। गुणों में माधुर्य और प्रसाद की प्रबलता है।' प्रस्तुत काव्य में सभ्य समाज के जीवन के अनेक चित्रों के साथ गोप–गोपी खेल की घटनाओं, चक्की पीसने वाले श्रमिक आदि वर्गों की प्रेम–लीलाओं का सजीव वर्णन इस ग्रंथ में उपलब्ध है।

जयवल्लभ कृत– 'बज्जलग्ग'

'गाथा सप्तशती' के समान 'बज्जलग्ग' प्राकृत भाषा के मुक्तकों का एक कोष ग्रंथ है। इस ग्रंथ में 795 पद्य मिलते हैं। बजलग्ग भी श्रृंगार – प्रधान कृति है। एवं इसमें जीवन के अन्य अनेक पक्षों का भी चित्रण है।

संस्कृत साहित्य में सतसई – परम्परा

संस्कृत साहित्य में लिखित आर्या सप्तशती का स्थान प्रमुख है। जितना मधुर – ललित प्रयोग आर्या सप्तशती में देखने को मिलता है, इसके पहले किसी और ग्रंथ में देखने को नही मिला। जयदेव ने भी इस रचना की श्रृंगारिकता की प्रशंसा की है। श्रृंगार रस के दोनों पक्षों को अन्योक्ति प्रयोगो द्वारा आकर्षक बना दिया गया है। डॉ. अरूणा अब्रोल नायिका एवं संयोग वियोग का वर्णन करती हुए लिखती है – ' श्रृंगार रस के दोनों पक्षों के वर्णन तो असंख्य है परन्तु वियोग श्रृंगार के प्रवास वर्णनों में विरहजन्य सन्ताप वर्णन अधिक नहीं हुआ है। प्रवासी नायक संयोग काल के सुखी क्षणों और प्रस्थान समय की उद्विग्नता का अनुसरण मात्र करके रह जाता है। विरह की तीव्रता इन पक्षों में परिलक्षित नहीं होती। इसलिए वियोग श्रृंगार – वर्णन में कवि पर्याप्त संयत रहा है। "

कवि का मन नायक नायिकाओं की छटपटाहट तथा मान के अवसर पर नायक की विनम्रताएँ, वचनबद्धता आदि में अधिक रमा है। इसके उपरांत संस्कृत साहित्य में कालिदास द्वारा रचित ऋतुसंहार तथा मेघदूत मुक्त काव्य के मुख्य ग्रंथ है। डॉ. संगीता जगताप ऋतुसंहार के विषय में लिखती है–' कालिदास विरचित 'ऋतुसंहार' में छह सर्गो तथा 144 पद्य हैं।

सभी सर्गो में क्रमशः छह ऋतु का वर्णन किया गया है। यद्यपि ऋतुओं का वर्णन वाल्मीकि कृत रामायण से लेकर सभी प्रसिद्ध महाकाव्यों में किसी न किसी रूप में मिलता है, पर संस्कृत साहित्य की परंपरा में ऋतुसंहार पहला काव्य है जो स्वतंत्र रूप से ऋतु वर्णन को विषय बनाकर लिखा गया है। ऋतुचक्र के परिवर्तन के साथ भारतीय वसुन्धरा की सुषमा में होने वाले आवर्तन – विवर्तन का इतना मनोहारी चित्रण समग्र रूप में पहली बार इस काव्य

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

के द्वारा प्रस्तुत किया गया है।' कालिदास ने ऋतुसंहार में प्रकृति, वन्य प्राणियों, पर्वत, धरती, ऋतु आदि का यथार्थ चित्रण किया है। यह एक लघु काव्य है जिसमें 144 छंद है। इसके उपरांत संस्कृति साहित्य में दुर्गा सप्तशती का अपना एक धार्मिक महत्व है। मार्कंडेय पुराण के अंतर्गत 13 अध्यायों में देवि को प्रबंधात्मक रूप में कथा को दिखाया गया है। इसमें माँ दुर्गा द्वारा शुभ-निशुंभ रक्त- बीज आदि राक्षसों एवं देवी शक्ति के युद्ध की गाथा का गुणगान किया गया है। देवी के महात्म्य को बतलाना इस सतसई का मुख्य उद्देश्य है तथा सतसई परम्परा की एक महत्वपूर्ण कड़ी इस सतसई को माना जाता है।

हिन्दी साहित्य में सतसई - तुलसी सतसई

भक्ति काल में भी सतसई साहित्य की रचना हुई है। तुलसीदास ने संवत 1642 में सतसई लिखी है। हिन्दी साहित्य के सतसई परंपरा में इसे प्रथम सतसई माना गया है। महाकवि तुलसीदास के द्वारा रचित इस सतसई को तुलसी - सतसई नाम से जाना जाता है। इन्होंने सतसई को सात सर्गों में विभक्त किया है। प्रस्तुत प्रथम सर्ग में भक्ति भाव का वर्णन किया गया है, दूसरे सर्ग में उपासना से संबंधित दोहे प्रस्तुत किए गए हैं, तृतीय सर्ग में राम भजनों का गान किया गया है, चतुर्थ सर्ग में आत्म प्रबोध का निरूपण किया गया है, पंचम सर्ग में कर्म सिद्धांत का निरूपण है, छठे में ज्ञान सिद्धांत एवं सातवें सर्ग में महाकवि तुलसीदास ने राजनीति की चर्चा की है। डॉ. अरूणा अब्रोल लिखती है-' तुलसी सतसई के दोहों में कबीर की छाप को देखा जा सकता है परंतु यह मान्यता सत्य नहीं है। तुलसीदास की सतसई साहित्य में उनका साकारोपासक का मन बोलता है। ' तुलसी की प्रस्तुत सतसई में भक्ति एवं ज्ञान का समन्वय देखने को मिलता है। इसे पढ़कर पाठक अत्यंत तृप्ति का अनुभव करते हैं।

बिहारी सतसई

रीतिकालीन प्रसिद्ध कवि बिहारी ने बिहारी सतसई की रचना की। 'बिहारी सतसई' पर 'गाथा सप्तशती, गोवर्धनाचार्य कृत' आर्या सप्तशती आदि का प्रभाव देखने को मिलता है। डॉ. अरुणा अब्रॉल लिखती है - बिहारी हाल के परवर्ती हैं। पंडित पदसिंह शर्मा के ये शब्द कितने प्रमाणिक है- " बिहारी सतसई के आदर्श प्राकृत 'गाथा सप्तशती', 'आर्या सप्तशती' और अमरुकशतक मुख्य ग्रंथ हैं।" बिहारी सतसई की रचनाकाल 1692 माना जाता है, एवं तभी से सतसई रचना का क्रम प्रारंभ हुआ। उपर्युक्त सतसई में 713 दोहे माने जाते हैं। इसमें श्रृंगार रस की प्रधानता है एवं वियोग श्रृंगार रस भेदों को निरूपित किया गया है। नीति और भक्ति के पदों को भी इसमें समाहित किया गया है, परंतु प्रधानता श्रृंगार रस की है। अरुणा अब्रोल लिखती है- " बिहारी सतसई के श्रृंगार वर्णन में नायिका प्रेम

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

का स्वरूप सर्वाधिक उत्कृष्ट है। महाकवि बिहारी ने श्रृंगार के क्षेत्र में वही वर्ण्य सामग्री दी है जो और प्राचीन कवि देते आए हैं। श्रृंगार की वे सभी बातें इन में बराबर आती है जो रूढ़िगत है। विषय का विस्तार इनकी रचना में नहीं हो पाया।" बिहारी सतसई में श्रृंगार के पश्चात भक्ति का स्वरूप अधिक आकर्षक दिखता है। बिहारी ने जगत, ब्रह्मा, सगुण, निर्गुण, आदि का विशेष रूप से वर्णन किया गया है। बिहारी सतसई इतनी लोकप्रिय हुई कि तभी से सतसई परंपरा का आरंभ होने लगा।

'रसनिधि सतसई' रीतिकाल में बिहारी सतसई के बाद क्रमशः रसनिधि– सतसई, जिसकी रचना पृथ्वी सिंह ने की थी। यह एक वृहदग्रंथ है, जिसका नाम रतन हजारा दिया गया है। इसे संक्षिप्त रूप में रसनिधि – सतसई कहा गया। इसका रचना का समय 1660 से 1717 के बीच माना जाता है। इसमें बिहारी का अनुकरण किया गया

रहीम – सतसई

कवि रहीम के नाम से ज्ञात इस सतसई की पूर्ण प्रति नहीं मिलती है। इसकी एक प्रति का संस्करण पंडित माया शंकर याज्ञिक ने प्रकाशित करवाया था। नीति और जीवनानुभव को रहीम ने अपने दोहों में स्थान दिया है।

मतिराम – सतसई

रीतिकाल के कवियों में मतिराम का नाम भी काव्य प्रतिभा के लिए प्रसिद्ध है। इस सतसई में भी प्रधानतः श्रृंगार ही है, श्रृंगार के अतिरिक्त भक्ति और नीति दोहे भी हैं।

युक्ति–तरंगिणी

युक्ति तरंगिणी कुलपति की 1773 में लिखी गई कृति है। इसके नाम में सतसई नहीं है परंतु कुलपति ने इसमें 707 दोहे समाहित किए हैं। इस सतसई में श्रृंगार के दोनों पक्षों के साथ अन्य रसों का भी वर्णन है। इस सतसई के 104 दोहों में नायिका भेद का ही निरूपण है।

भूपति – सतसई

भूपति ने संवत 1791 में अमेठी के राजा गुरुदत्त सिंह के कहने पर सतसई लिखी थी। जिसमें श्रृंगार, भक्ति एवं नीति के वाद है।

वृंद – सतसई

1761 में कवि वृंद द्वारा रचित सतसई से ही उन्हें प्रसिद्धि मिली। इसमें श्रृंगार का वर्णन नहीं किया गया है, बल्कि नीति, सदाचार एवं शिष्टाचार पर विशेष बल दिए गए हैं।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

चंदन – सतसई

1820–1850 के मध्य कवि चंदन ने श्रृंगार रस एवं भक्ति भाव पर आधारित एक सतसई की रचना की थी।

राम – सतसई

'राम सतसई' की रचना संवत 1860 से 1880 के मध्य कवि राम सहाय ने की थी। परम्परागत दृष्टि से इस सतसई में भी श्रृंगार का वर्णन है।

विक्रम – सतसई

1825–1885 के मध्य कवि विक्रम द्वारा इस सतसई की रचना हुई है। यह कृति बिहारी एवं मतिराम से प्रभावित है। भक्ति, लोक नीतिपरक, व्यावहारिक अनुभव, ऋतु, प्रकृति, पर्व, रीति–रिवाज, धार्मिक मान्यताओं का उल्लेख इस सतसई में समाहित है।

दयाराम सतसई

दयाराम सतसई को डॉ. अम्बाशंकर नागर ने प्रकाशित करवाया है। प्रस्तुत काव्य का रचना काल सन् 1833–1909 तक माना जाता है इसके 146 ग्रंथ उपलब्ध है। जिसमें 46 ग्रंथ ब्रजभाषा में रचित है। यह सतसई 15 प्रकरणों में विभक्त है।

गुरूमुखी लिपी में प्राप्त सतसई – साहित्य

पंजाब से प्राप्त प्रथम सतसई का उल्लेख पं. चन्द्रकांत बाली ने 'पंजाब प्रान्तीय हिन्दी साहित्य का इतिहास' नामक ग्रंथ में किया है। 'तदन्तर डॉ. राम प्रकाश ने आचार्य अमीरदास की कृतियों पर लिखे शोध प्रबन्ध में चार सतसई ग्रन्थों का उल्लेख किया है।

1. ब्रजराज – विलास सतसई इसके रचनाकर आचार्य अमीरदास हैं। इन्होने सं 1889 में इसकी रचना की। इसमें 701 दोहों का संकलन है, जिसमें से 625 दोहे श्रृंगार रस पर आधारित हैं शेष अन्योक्ति, नीति, शान्तरस, एवं राधा–कृष्ण पर लिखे गये है।

2. आनन्द – प्रकाश सतसई – इस सतसई की रचना संवत् 1890 में पाटियाला दरबार के कवि दलसिंह ने की थी।

3. सतसैया – रामायण – कीरत सिंह द्वारा रचित 700 दोहों का वर्णन है जो रामकथा पर आधारित है। इसकी रचना सन् 1910 में हुई है।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

4. वसन्त सतसई – पटियाल नरेश महेन्द्र सिंह के लिए कवि वसन्त सिंह ने लिखी थी। प्रस्तुत सतसई में अन्योक्ति के माध्यम से राजनीति एवं लोक व्यवहार, नीति की शिक्षा दी गई है।

निसीदिन रिश्वत लेन तै टरत न थे सरदार।

इन के उर आगार में बसत न परवरदीगार।।'

आधुनिक काल में सतसई साहित्य

आधुनिक काल में भी बहुत सी सतसई प्रकाश में आयी हैं। इनमें हरिऔध – सतसई, वीर सतसई, किसान सतसई, ब्रज – सतसई, ज्ञान – सतसई, करूण – सतसई, पंकिल – सतसई आदि।

हरिऔध – सतसई

आधुनिक काल में 700 दोहो एवं 96 प्रसंगों में रचित सतसई की रचना अयोध्या सिंह 'हरिऔध' ने की। यह आधुनिक काल में रचित पहली सतसई खड़ी बोली में लिखी गई है। इसमें ईश्वर गुण – गान, विनय–वर्णन एवं स्तुति से सम्बन्धित दोहे लिखे गये हैं।

वीर – सतसई

सन् 1927 में कवि वियोगी हरि जी ने ब्रजभाषा में वीर सतसई लिखी है। इसकी रचना सात शतकों में की गई है। इस सतसई में समाज सुधार, देशभक्ति और वीर रस आदि से जुड़े हुए दोहे लिखे गए है। यह सतसई आधुनिक काल की प्रसिद्ध सतसईयों में शामिल है।

किसान सतसई

उत्तर रीतिकालीन ब्रजभाषा में श्री जगनसिंह सेंगर ने किसान सतसई की रचना की है। इसमें भारत के कृषकों की दशा का वर्णन किया गया है– पिया दूरि दूरभिच्छ दुख धंधो लयौ टटोल।

धूंसा से उर में लगे, बालताहिं वायस बोलः। ' पूरी सतसई के सातों शतकों में किसानों की दशा, परिस्थितियों का चित्रण है।

ब्रज– सतसई

'ब्रज – सतसई' की रचना पं. रामचरित उपाध्याय ने आधुनिक काल में की है। इस तीन खण्डों में रचित सतसई में 715 दोहे हैं।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

ज्ञान– सतसई

ब्रजभाषा में ज्ञान सम्बन्धित दोहों की सतसई लिखी गई, जिसके कवि राजेन्द्र शर्मा है। प्रस्तुत सतसई में मानव को ज्ञान के माध्यम से उसके अन्दर के अन्धकार को समाप्त करने का प्रयास किया गया है।

करूण– सतसई

खड़ी बोली में अविभाजित पंजाब के निवासी रामेश्वर 'करूण' ने 715 दोहों के सतसई की रचना की। प्रस्तुत सतसई में दुःख एवं देशभक्ति के पदों का चित्रण है।

पंकिल – सतसई

आधुनिक जीवन से सम्बंन्धित पंकिल – सतसई की रचना कवि रामरज पंकिल है। प्रस्तुत सतसई में ब्रज भात्रा में रचित 701 दोहे है। इस सतसई को तुलसी, रहीम, और वृन्द की परम्परा का माना जाता है। डॉ. अरूणा अब्रोल लिखती है– 'कवि पंकिल को मै निःसंकोच वृंद कवि की श्रेणी में रखती हूँ। उसमें कवि पंकिल ने सतसई की भूमिका में लिखा है कि आज देश में जो चरित्र संकट दृष्टिगोचर हो रहा है उसके मूल में भौतिकता की दिशा में हमारी एकांगी उपलब्धियाँ है। अतः जब तक हम श्रेयस के साथ उसे समन्वित करके नहीं चलेंगे, साध्य और साधन की पवित्रता को ध्यान में नहीं रखेंगे, स्वार्थ परमार्थ में नहीं बदलेंगे, आत्म संयम विवेक और अंतःकरण की शुद्धता में विश्वास नहीं करेंगे, तब तक हम अपने जीवन को सत्य, शिव और सुन्दर नहीं बना सकेंगे। आज के सामाजिक परिवेश में यह हमारी आवश्यकता है। इसमें सात सौ एक दोहो को स्थान दिया गया है लगभग सभी दोहे, भक्ति, नीति एवं उपदेशमूलक है। '

'बाल सतसई'

'बाल सतसई' के द्वारा डॉ. परशुराम शुक्ल ने हिन्दी सतसई परम्परा को आगे बढ़ाने का काम किया है। एक लम्बे अन्तराल के बाद बाल सतसई की रचना हुई है। इसका उद्देश्य बच्चों में मानव मूल्य को उत्पन्न करने का प्रयत्न बाल सतसई की उपादेयता 055 किया गया है। साहित्यिक दृष्टि से 'बाल सतसई' एक सर्वोत्कृष्ट कृति है। सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, मनोवैज्ञानिक दृष्टि से बालकों के व्यक्तित्व को ध्यान में रखते हुए इसकी रचना की गई है। डॉ. परशुराम शुक्ल ने बच्चों को नैतिक शिक्षा देने के उद्देश्य से 35 अध्यायों में 'बाल सतसई' की रचना की है, जिसके माध्यम से बच्चों का संतुलित विकास हो सके।

'बच्चों में विकसित करें, सकारात्मक सोच।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

खेल भावना भी भरें, ज्यों क्रिकेट का कोच।। '

'बाल सतसई' के अंतर्गत नीति को प्रमुखता दी गई है तथा पूरी बाल सतसई में बाल व्यक्तित्व के विकास को प्रमुखता दी गई है। बाल सुरक्षा तथा बाल विकास को कवि शुक्ल ने नीतिपरक दोहों के माध्यम से स्पष्ट किए हैं।

'बाल सतसई' को देखते हुए कहा जा सकता है कि डॉ. परशुराम शुक्ल सच्चे अर्थों में बाल साहित्यकार हैं, क्योंकि पूरी 'बाल सतसई' बच्चों को ही केन्द्र में रखकर लिखी गई है, एवं बच्चों के विकाश से सम्बन्धित सभी पक्षों पर उन्होंने इसमें चर्चा की है। वह इसमें बच्चों का व्यक्तित्व विकास में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करते हुये सभी पक्षों को हमारे सम्मुख प्रस्तुत करते है।

सतसई साहित्य परम्परा से यह निष्कर्ष निकलता है कि हिन्दी साहित्य में सतसई में परम्परा प्राकृत, संस्कृति साहित्य से ही देखने को मिलती है। रीतिकाल में यह मुख्य रूप से प्रसिद्ध हुई। सतसई में श्रृंगार, भक्ति परक, नीति का साहित्य अधिक है। सतसई में सामाजिक, नैतिक, राजनैतिक, मानसिक विषयों का सूक्ष्म वर्णन देखने को मिलता है। सतसई परम्परा को 'बाल सतसई' के माध्यम से आगे ले जाने का काम डॉ. परशुराम ने किया है।

2. बाल सतसई की संरचना

'बाल सतसई' शीर्षक से ही यह स्पष्ट होता है कि 'बाल सतसई' नीतिपरक काव्य है। बीस-बीस दोहों वाले पैंतीस शीर्षकों में इस सतसई को विभाजित किया गया है। संपूर्ण सतसई की रचना का मुख्य केंद्र बालक है। सतसई में बाल व्यक्तित्व के विकास को प्रधानता मिली है। संपूर्ण बाल सतसई मुक्तक काव्य ग्रंथ है, जिसकी रचना दोहा छंद में हुई है। इसमें 701 दोहे हैं। इसीलिए इसे सतसई नाम दिया गया है। डॉ. शुक्ल जी ने बाल सतसई के केंद्र में बच्चों को रखा है। उन्होंने बच्चों के महत्व को लगभग संपूर्ण काव्य में दिखाया है। बाल सतसई का उद्देश्य यह दिखाना है कि हम बच्चों को ईश्वर का स्वरूप मानते हैं और उन्हीं ईश्वर प्रदत्त बच्चों के साथ पशुवत् व्यवहार भी करते हैं। समाज में हो रहे बच्चों पर अत्याचार, शोषण, आदि विरोधाभाषी स्थितियों ने बाल सतसई की रचना में मुख्य भूमिका का निर्वाह किया है।

'बाल सतसई' का उपयोग बच्चों से अधिक उनके माता-पिता, अभिभावकों, शिक्षकों आदि के लिए है। इसके उपयोग से वे बच्चों के महत्व को समझेंगे एवं बच्चों के साथ उनके व्यवहार में भी परिवर्तन आयेगा तथा उन्हें बच्चों के साथ सद्व्यवहार की प्रेरणा मिलेगी।

'बच्चों का नित कीजिए, मान और सम्मान।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

ये जीवन की प्रेरणा, ये सच्चे इंसान।। '

कवि यहाँ बच्चों के सम्मान की प्रेरणा दे रहे और यह संकेत करते है कि बच्चों से अधिक सच्चा एवं स्वच्छ मन का कोई नहीं हो सकता। सच्चा व्यक्ति जिसमें धर्म, जाति, सम्प्रदाय आदि का भेद-भाव न हो। बच्चे इन भेद-भावों से रहित होते है उनका मन बहुत ही स्वच्छ होता है।

डॉ. परशुराम शुक्ल कृत 'बाल सतसई' मुक्तक काव्यकृति है। यह दोहा छन्द में लिखा गया सात सौ एक दोहों का संकलन है, जिसके कारण इसे सतसई कहा गया। यह पैंतीस अध्यायों में विभाजित संग्रह है। इसके प्रत्येक अध्यायों में 20-20 दोहे संग्रहीत हैं। साहित्यिक दृष्टि से बाल सतसई शुक्ल की महत्वपूर्ण कृति है। यह बालकों के व्यक्तित्व का संतुलित विकास - शारीरिक विकास, मानसिक विकास, बौद्धिक विकास, नैतिक विकास आदि में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करती है। बालमनोवृति के समुचित विकास के लिए स्वस्थ बाल साहित्य की रचना अति आवश्यक है।

डॉ. परशुराम शुक्ल ने बालकों के स्वभाव, मनोविज्ञान, शिक्षा, समाज, स्वास्थ आदि को ध्यान में रखते हुए 'बाल सतसई' ाल सतसई' में जिन पैंतीस शीर्षको के दोहो को प्रस्तुत किए है, वे बाल वन्दन से आरम्भ होते हुए बच्चों के महत्व पर जा कर समाप्त होते हैं। अर्थात 'बाल सतसई ' का प्रथम सर्ग बालवन्दन है।

कविता में बालक को ईश्वर का रूप मानते हुए उसकी स्तुति की गई है। भारतीय काव्य जगत में किसी भी रचना का आरम्भ वन्दना से करने की परम्परा रही है। डॉ. परशुराम शुक्ल ने भी 'बाल सतसई' का शुभारम्भ 'बाल वन्दन' अर्थात बालक की वन्दना से कर के भारतीय साहित्य की परम्परा को प्रतिष्ठित किया है, वहीं दूसरी ओर बालकों को ईश्वर प्रदत्त मानकर उनकी स्तुति करते हुए उनके गुणों को भी बतलाया है। वह बालक के जन्म के समय माता-पिता को हो रही अपार प्रसन्नता को दिखलाते हुए कहते है, उन्हें ऐसा प्रतित होता है मानो ईश्वर स्वयं चलकर उनके पास आ रहा है। शुक्ल जी कहते हैं कि बालकों के मन-मस्तिष्क में ईश्वर का वास होता है इसलिए हमें सदा उनका सम्मान करना चाहिए।

'बच्चों में देखी सदा, एक निराली बात।

झगड़ा करते है मगर अगले पल मिल जात।।'

बच्चों का स्वभाव अत्यन्त निर्मल होता है। वे भेद-भाव को नहीं मानते। सबके साथ उनका व्यवहार एक समान होता है। वे प्रेमपूर्वक एक दूसरे को गले लगाते है एवं साथ-साथ मिल जुल कर खेलते है। अगर किसी बात से नाराजगी है या झगड़ा हुआ है तो वे दूसरे ही पल सब कुछ भूल जाते हैं। अर्थात बच्चों से बढ़कर इस संसार में कुछ भी नहीं

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

है। इसलिए प्रत्येक मनुष्य यह प्रार्थना करता है कि उसका बचपन लौट आए। 'बाल वन्दन' कविता में बालकों की कोमल मनोभावों को बतलाने की चेष्टा की गयी है।

आज विश्व के सभी राष्ट्रों ने बाल विकास में बाल साहित्य की भूमिका का महत्व समझा है। इस बड़े से विश्व के अन्दर बच्चों की अपनी एक दुनिया बसती है, जो बच्चों की दुनिया होती है। उसमें असमानता के लिए कोई स्थान नहीं होता। इसका निर्माण छोटे–छोटे बच्चों के द्वारा होता है। जहाँ नफरत के लिए कोई स्थान नहीं होता। यहाँ तो बस प्यार की गंगा बहती है।

'ओ मानव! मति मन्द तू, बच्चों को पहचान।

इनसे बढ़कर तू नहीं, और न तेरा ज्ञान।।'

डॉ. शुक्ल 'बाल विश्व' के द्वारा समाज में बच्चों के महत्व को दिखलाते

नैतिक शिक्षा कटु बड़ी, नहीं सुनेंगे बाल।

सुगर कोट कर दीजिए, फिर देखिए कमाल।।'

नैतिक शिक्षा बहुत ही अप्रिय, कड़वी होती है। यह बच्चों को बिल्कुल अच्छी नहीं लगती। किन्तु बच्चों के समुचित विकास के लिए आवश्यक है उन्हें मीठी चासनी में डुबोकर बाहर से उसे मीठा बनाना पड़ेगा। बच्चों को नैतिकता से जुड़ा हुआ ज्ञान धीरे–धीरे देना चाहिए था। उतना ही देना चाहिए जितना बच्चे ग्रहण कर सके तथा उन्हें यह समझाना होगा कि अगर उनमें नैतिक गुण है तो वे अच्छे स्वभाव, आचरण का आकलन करेंगे तथा स्वयं में सच्चरित्र, परिश्रमी एवं ईमानदारी की भावना को अपनाएँगे तथा जीवन में सफलता के शिखर पर पहुंचेंगे।

'बच्चे नैतिक बन गये, सफल हो गये आप।

मिट जायेंगे आपके जीवन के अभिशाप।।'

बच्चों के स्वभाव के साथ ही उनका मस्तिष्क भी बहुत कोमल होता है, उन्हें बोझिल एवं जटिल बातें समझ में नहीं आती। बच्चों के स्वभाव के अनुरुप ही हमें उन्हें शिक्षा देने की आवश्यकता है। बच्चों को नैतिक शिक्षा देते समय उनकी रुचि का आकलन कर लेना चाहिए, जिससे उनके ऊपर गहरा प्रभाव पड़े। बच्चों में सदा सकारात्मक सोच को विकसित करने की चेष्टा करनी चाहिए। इसके लिए शिक्षक की भूमिका बहुत आवश्यक है। शिक्षक बच्चों के लिए प्रशिक्षक मार्गदर्शक होता है। उनका यह दायित्व होता है कि वे बच्चों में नैतिकता का गुण विकसित करें। उन्हें बच्चों को समझाना होगा कि जैसे शारीरिक विकास के लिए आहार आवश्यक है वैसे ही मस्तिष्क के स्वस्थ विकास के लिए

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

सच्चरित्र एवं नैतिक गुण आवश्यक हैं। नैतिक गुणों के द्वारा ही समाज में प्रेम, सहअस्तित्व और परोपकार की भावना जागृत होगी एवं समाज आदर्श एवं प्रगतिशील बनेगा। नैतिक शिक्षा के द्वारा बच्चों में भावनाओं का विकास करना एवं उनके कलात्मक पक्ष को सुदृढ़ करना भी कवि या साहित्यकार का उद्देश्य होता है।

आज बाल मनोविज्ञानी यह अनुभव करते है कि ज्ञान, आचरण और सामाजिक मूल्यों में जो परिवर्तन आ रहे हैं, उन्हें बच्चों से परिचित कराया जाना आवश्यक है। उनके भविष्य को दिशा नहीं दी गई तो वे जीवन के दौड़ में कभी सफल नहीं हो पायेंगे। बाल साहित्यकार बच्चों की रुचियों को ध्यान में रखते हुए उनका मनोवैज्ञानिक अध्ययन करें, उनके परिवेश, बौद्धिक विकास बाल सतसई की उपादेयता 089 आदि का विश्लेषण करें और उसके बाद बाल साहित्य की रचना की जाए तथा इसके माध्यम से विभिन्न प्रकार की सूचनाएँ एवं जानकारियाँ भी दी जा सकती है। इससे बच्चों का ज्ञानवर्धक होता है। बाल साहित्य बच्चों की बौद्धिक क्षुधा और मनोरंजन की लालसा को शांत करते हुए उनमें स्वाभाविक विकास, उनकी रुचि और मनोवृति को नया रूप प्रदान करेगा एवं जीवन के मानवीय मूल्यों को समझने योग्य बनायेगा।

संदर्भ सूची

1. डॉ. अरुणा अब्रोल, रीतिकालीन सतसई साहित्य में नायिका वर्णन, आर्य बुक डिपो प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण – 1985, पृष्ठ 22
2. डॉ. अरुणा अब्रोल, रीतिकालीन सतसई साहित्य में नायिका वर्णन, आर्य बुक डिपो प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण – 1985, पृष्ठ 23
3. डॉ. अरुणा अब्रोल, रीतिकालीन सतसई साहित्य में नायिका वर्णन, आर्य बुक डिपो प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण– 1985, पृष्ठ 26
4. डॉ. संगीता जगताप सतसई काव्य परम्परा और बाल सतसई, आशा प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण – 2017, पृष्ठ–18
5. डॉ. अरुणा अब्रोल, रीतिकालीन सतसई साहित्य में नायिका वर्णन, आर्य बुक डिपो प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण– 1985, पृष्ठ 29
6. डॉ. अरुणा अब्रोल, रीतिकालीन सतसई साहित्य में नायिका वर्णन, आर्य बुक डिपो प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण – 1985, पृष्ठ – 30

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

7. डॉ. अरुणा अब्रोल, रीतिकालीन सतसई साहित्य में नायिका वर्णन, आर्य बुक डिपो प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण- 1985, पृष्ठ 42

8. डॉ. अरुणा अब्रोल, रीतिकालीन सतसई साहित्य में नायिका वर्णन, आर्य बुक डिपो प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1985, पृष्ठ 43

9. डॉ. अरुणा अब्रोल, रीतिकालीन सतसई साहित्य में नायिका वर्णन, आर्य बुक डिपो प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-1985, पृष्ठ - 31

10. डॉ. अरुणा अब्रोल, रीतिकालीन सतसई साहित्य में नायिका वर्णन, आर्य बुक डिपो प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण - 1985, पृष्ठ 33 11. डॉ. परशुराम शुक्ल, बाल सतसई, नमन प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण - 2013, पृष्ठ-73

12. डॉ. परशुराम शुक्ल, बाल सतसई, नमन प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण - 2013, पृष्ठ- 17